दो पीढियों का टकराव

(Clash of Two Generations)

सुमित्रा शर्मा, मॉर्गनविल (न्यू जर्सी)

अभी कुछ दिनों पहले मुझे अपने एक मित्र परिवार से एक वैवाहिक समारोह में मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। कुशल क्षेम आदान-प्रदान के बाद मेरी उस अभिन्न सहेली ने जो कुछ बताया सुनकर मैं हतप्रभ रह गई। उसने कहा, "हमारा बेटा घर छोड कर चला गया है। कारण सिर्फ इतना था कि हमें उसका रोज-रोज देर से घर लौटना और बिना बताए मित्रों के साथ चले जाना बहुत ही चिंतित करता था। बस रोज की इस बहस से तंग आ कर उसने यह निर्णय ले लिया।" यह कह कर वह फूट-फूट कर रोने लगी।

उस सहेली के उस पुत्र को भी मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। उसने बाद में बताया, "मम्मी-डैडी मेरी भावनावों की कद्र नहीं करते। वे मुझे अभी भी बच्चा ही समझते हैं। मुझे भी अपने बारे में निर्णय लेने का पूरा हक है।"

दो पीढियों के बीच अंतर और इस तरह के टकराव के कारण आज कई परिवार बिखर गये हैं या फिर बिखरने की स्थिति तक जा पहुँचे हैं। आज की युवा पीढी जिस दौर से गुजर रही है उसमें कुछ भी निश्चित नहीं - केवल विद्रोह है। यहाँ अमेरिका में बसे भारतीय मूल के युवा अभी भी अपनी व्यक्तिगत पहचान (आइडेंटिटी) से अनभिज्ञ हैं। माता-पिता का भी अत्यधिक रूढिवादी होना, अपनी पुरानी परंपराओं से चिपके रहना तथा अपनी ही बात पर अडे रहना सही नहीं है। इसके सिवाय आज की यह युवा पीढी भी अपने माता-पिता की भावनाओं तथा जिम्मेदारियों को सही ढंग से समझ नहीं पा रही है। उन्हें भी चाहिये कि अपने माता-पिता के अनुभवों से लाभ उठाने की कोशिश करें। सिर्फ इतना कह देना काफी नहीं होता कि "मम्मी-डैडी तो हमें समझते ही नहीं,क्या करें ?" आखिर ऐसी क्या वजह है कि ये दोनों पीढियाँ, जो कि एक दूसरे पर निर्भर हैं, परस्पर टकराव की स्थिति तक आ पहुँची हैं ? आश्चर्य होता है कि एक तरफ तो आजकल के माता-पिता अपने बच्चों को बडे-बडे कान्वेण्ट स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा देना चाहते हैं, जहाँ स्वतंत्रता और आधुनिकता पर जोर दिया जाता है और दूसरी तरफ वहाँ से सीखी गई थोडी सी भी स्वतंत्रता को घर में माता-पिता बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। अगर माता-पिता बच्चों के प्रति थोडी सी भी विनम्रता व उनके कार्यो में थोडी सी भी रुचि दिखायें तो यह प्रयास बच्चों में काफी बदलाव ला सकता है। ऐसा सोचना भी उचित नहीं है कि आज के सभी युवा अपनी परम्परा और रीति-रिवाजों को ताक पर रख देते हैं। बल्कि आज के युवा में अच्छाई-बुराई समझने की अधिक क्षमता है। बस उन्हें अभिभावकों द्वारा थोडे से मार्ग-दर्शन व उचित सलाह की जरूरत है।

आज के माँ-बाप यह न भूलें कि कभी वे भी २० वर्ष के युवक या युवती रहे होंगे। उन्हें भी अपने जमाने के संगीत व मित्रों के साथ घूमना फिरना काफी अच्छा लगता रहा होगा। अपने से पहले के जमाने की चीजें उन्हें भी रास नहीं आती होंगी। आज के इस नये युग में युवा वर्ग की जरूरत है ताकि वे नई दुनियाँ में नये-नये तरह के प्रयोग करें क्योंकि आने वाली दुनियाँ में जीवन और भी कठिन होगा। अगर माता-पिता थोडा सा भी उदारवादी रवैया अपनायेंगे तो उन्हें बच्चे विद्रोही नहीं लगेंगे। इसलिये बच्चों की भावनाओं व मानसिकता को पहचानने, परखने व आदर करने की आवश्यकता है। ■

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्त्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥

Jagtprabhum devadevam-anantam purushottamam,
Stuvannama-sahastrena purushah satatotthitah.

“Always, after getting up from the bed, one should extol God Vishnu, who is the Lord of the whole universe, the Supreme Deity, the Eternal and Ideal Being.” (Bhishma’s advise to Yudhishthira in *Mahabharata*)